Ques → Write a short notes on the span of control.

नियंत्रण के विस्तार क्षेत्र पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

Ans → नियंत्रण का विस्तार क्षेत्र (span of control) प्रशासन का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। संगठन एवं प्रशासन में नियंत्रण की आवश्यकता स्वयं सिद्ध है। नियंत्रण की व्यवस्था का उद्देश्य इस बात के प्रति सचेत रहना है कि संगठन के कर्मचारी दिये गये आदेशो - निर्देशो और नियमो के अनुरूप काम कर रहे हैं या नहीं। नियंत्रण का विस्तार क्षेत्र उन अधिनस्थो या संगठन की इकाईयो की संख्या है, जिनका निर्देशन प्रशासन स्वयं करता है। यह अवधारणा ए० बी० ग्रेक्यूनस द्वारा वर्णित "ध्यान के विस्तार क्षेत्र" (span of attention) के सिद्धांत से संबंधित है। परिभाषिक रूप में डिमॉक के शब्दो में "The span of control is the number and range of direct habitual communication contracts between the chief executive of an enterprise and his principal follow offices."

नियंत्रण की सीमा को तय करने के प्रश्न पर विद्वानो में मतभेद है। हेनरी फेयॉल एवं एल० उर्विक का मत है कि "शिखर स्त प्रबंध के अधीन 5 से अधिक कर्मचारी नहीं होना चाहिए। कुछ विद्वानो (वालास ने) अधीनस्थ के रूप में 20 कर्मचारियो तक एक सीमा तय की है परन्तु यह सर्वमान्य धारणा है कि नियंत्रण का विस्तार क्षेत्र जितना छोटा होगा उतना ही अधिक संपर्क तथा नियंत्रण अधिक प्रभावशाली होगा। कुछ विद्वानो के मतानुसार नियंत्रण का कार्य क्षेत्र कम रखना भी कम खतरनाक नहीं है, परन्तु नियंत्रण की युक्ति संगत सीमित क्षेत्र अपने आप में एक अच्छाई है।

Determining factors of span of control → नियंत्रण का विस्तार क्षेत्र कितना होगा अर्थात् एक अधिकारी कितने कर्मचारियो पर प्रभावशाली नियंत्रण रख सकेगा, कुछ तत्वो पर निर्भर करता है। Luther Gullick ने ऐसे तीन मुख्य निर्धारक तत्वो की व्याख्या की है जो निम्न लिखित है।

(1) Function (कार्य) → कार्य से आशय है "कार्य की प्रगति"। यदि अधिकारी जिन व्यक्तियो पर नियंत्रण कर रहा है, इसके कार्यो की प्रकृति समान है, तो उसके नियंत्रण का क्षेत्र बड़ा हो सकता है, परंतु विभिन्न प्रकृति के कार्य करने वाले पर नियंत्रण रखने की आरूप अवस्था में उसके नियंत्रण का क्षेत्र सीमित होना चाहिए।

(2) Time (समय) → समय से अभिप्राय है कि पुराने तथा स्थायी संगठन का नियंत्रण क्षेत्र बड़ा हो सकता है परन्तु नये संगठन का

P.T.O.

Scanned with CamScanner

नियंत्रण क्षेत्र छोटा होना चाहिए।

③ Place (स्थान) → स्थान से आशय है कि यदि किसी पदाधिकारी को ऐसे 5 अधीनस्थ कर्मचारियों पर नियंत्रण रखना है, जिनके कार्यालय भौगोलिक दृष्टिकोण से दूर-दूर तक फैले हुए हैं, तो उसके नियंत्रण का क्षेत्र छोटा ही होना उचित होगा।

इन तीन तत्वों के अलावे चौथे तत्व के रूप में नियंत्रक का व्यक्तित्व भी जोड़ा जा सकता है। जिस पदाधिकारी का व्यक्तित्व जितना बड़ा होगा उसके नियंत्रण का क्षेत्र भी उतना ही बड़ा होगा। इस प्रकार नियंत्रण के क्षेत्र पर कई तत्वों का प्रभाव पड़ता है।

Concept of Span of Control :→ नियंत्रक का विस्तार क्षेत्र की संख्या की समस्या पर विचार करने के पश्चात् नियंत्रण के विस्तार क्षेत्र के मुख्य एवं महत्वपूर्ण सिद्धांतो का संक्षेप में निम्नवत वर्णन किया जा सकता है।

① योग्यतम व्यक्तियो की भी निरीक्षण और नियंत्रण करने की शक्ति सीमित होती है। वास्तव में मानवीय ज्ञान की भी कुछ सीमायें होती हैं, असीमित क्षमता कहीं नहीं पायी जाती है।

② जितनी अधिक योग्यता होती है, उसी के अनुपात में सक्रिय नियंत्रण क्षेत्र संकुचित भी होता है।

③ सक्रिय नियंत्रण क्षेत्र उसे कहते हैं जिसके आगे कोई भी कार्य वृद्धि करने से कार्य देर तथा उसके बारे में भ्रम उत्पन्न हो।

④ सभी कर्मचारियो को अपने से संबद्ध नियंत्रण के क्षेत्र के अंतर्गत ही कार्य करना पड़ता है।

⑤ एक रूपीय संगठन की अपेक्षा एक बड़े विविध रूपवाले तथा बिखरे हुए संगठन में अधीनस्थ कर्मचारियो की संख्या कम होती है।

⑥ समान कार्य करने वाले कर्मचारियो के मामले में नियंत्रण क्षेत्र अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत हो जाता है।

⑦ नियंत्रण क्षेत्र के विस्तार की माप के संबंध में अभी तक विद्वानो में मतैक्य का आभाव है, परंतु सर्वमान्य धारणा यह कि प्रशासकीय कार्य कुशलता हेतु नियंत्रण का क्षेत्र सीमित रहा ही ज्यादा अच्छा है। Gymon ने इसी संदर्भ में कहा है कि→

"Administrative efficiency is supposed to be enhanced by limiting the number of subordinate, who

report directly to any one administrator to a small number." (एक प्रशासन पर सीधी रिपोर्ट देने वाला अधीनस्थों की संख्या कम कर दी जाय तो प्रशासकीय कार्य कुशलता बढ़ जायेगी।)

Change in the concept of Span of Control :→

हाल ही में कुछ वर्षों से नियंत्रण के विस्तार क्षेत्र की समुची धारणा ही बदल गयी है जिसके मुख्य कारण है प्रशासन में स्वचालन का प्रगतिशील प्रयोग, संचार के प्रयुक्त माध्यम तथा एवं विशेषज्ञों की संख्या में वृद्धि। लोक सेवा में विशेषज्ञों की संख्या में अधिकाधिक वृद्धि होती जा रही है। यंत्रीकरण के कारण यातायात एवं संचार साधन अधिक गतिवान हो गये हैं। फलस्वरूप इससे समय और दूरी समाप्त हो जाती है। हाल ही के वर्षों में तकनीकी ज्ञान में भारी प्रगति हुई है। इन विभिन्न कारणों से नियंत्रण क्षेत्र की पुर्वप्रेक्षण काफी अधिक विस्तृत कर देना संभव हो गया है। आज विशेषज्ञ अपने काम में अनाड़ियों का हस्तक्षेप पसंद नहीं करते। विशेषज्ञों के निरंतर प्रगतिवान महत्व और स्वतंत्रता के कारण मुख्य कार्यपालन का कार्य नियंत्रण की अपेक्षा समन्वय का अधिक इस्तेमाल होता जा रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि आगामी कुछ ही वर्षों में Span of Control की समुची धारणा ही परिवर्तित हो जायेगी। तथा इसके स्थान पर सर्वथा नयी धारणा आर्विभूत होगी।

CONCLUSION :→ नियंत्रण क्षेत्र की उपर्युक्त विवेचना से ही प्रशासन को संगठित करने में इस सिद्धांत की महत्ता स्पष्ट हो जाती है। वस्तुतः इस सिद्धांत का "पद सोपान" की व्यवस्था से घनिष्ठ संबंध है। यह बात भी इसी सिद्धांत के आधार पर तय होती है कि एक संगठन की पिरामिड में कितने स्तर होने चाहिए। इस प्रकार प्रशासन को संगठित करने तथा सुगमता पूर्वक कार्यशील होने में इस सिद्धांत से काफी सहायता मिलती है। इसके माध्यम से प्रशासन की कार्यवाहियों की उचित निगरानी भी होती है। डा० सहदेव प्रसाद ने इसी संदर्भ में कहा है → "Span of Control is nothing but the span of attention applied to work of

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(4)

Supervision and control of subordinates"

अंतिम निष्कर्ष के रूप में हम "~~पिफनर~~ पिफनर" एवं "शेरवुड" Piffner
की इस उक्ति को उद्धृत कर सकते हैं।

"Span of Control is so ~~enterchanged~~ enterchanged ~~entrenched~~ in the administrative culture that it must be accorded a prominant place in any book of organisation."

—×—

Scanned with CamScanner